7

एक नई वाचा

(यिर्मयाह 31)

पूरे पुराने नियम में परमेश्वर को अपने लोगों के साथ वाचाएं बांधने और उन्हें पूरा करने वाले के रूप में दिखाया गया है। ''वाचा'' ऐसा प्रबन्ध होता है जिसके द्वारा परमेश्वर अनुग्रहकारी ढंग से अपने लोगों को आशीष देता है और जिसके द्वारा वह अपने लोगों को अपनी उद्धारता के उत्तर उसकी इच्छा से मेल खाने के लिए ले जाता है।

परमेश्वर की चार वाचाओं के साथ एक और वाचा

पुराने नियम में अपने लोगों के साथ परमेश्वर की चार वाचाओं का वर्णन है:

1. *नूह के साथ परमेश्वर की वाचा।* उत्पत्ति 6:18 में परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार को आने वाले जल प्रलय से निकालने की प्रतिज्ञा की। उसके बाद (उत्पत्ति 9:11) उसने पृथ्वी को दोबारा जल प्रलय से नाश न करने की प्रतिज्ञा की।

2. *अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा।* (अध्याय 12; 15; 17)परमेश्वर ने अब्राहम को उसके पीछे आने के लिए बुलाया और उसे एक बड़ी जाति बनाने और उसे आशीष देने का वचन दिया ताकि वह सब जातियों के लिए एक आशीष का कारण हो सके। इस वाचा का परिणाम इस्राएल जाति अर्थात अब्राहम के शारीरिक वंशजों की स्थापना हुआ, जिसके द्वारा अन्त में मसीह को आना था। इस प्रकार से पृथ्वी के सब लोगों में वास्तव में आशीषित होना था।

3. *दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा।* 2 शमूएल 7 में जब दाऊद ने यहोवा के लिए ''घर'' (मन्दिर) बनाने की इच्छा व्यक्त की, तो परमेश्वर ने यह कहते हुए उत्तर दिया कि वह दाऊद के लिए एक ''घर'' (अर्थात एक वंशावली या राजवंश) बनाएगा। फिर, यह प्रतिज्ञा ''दाऊद'' यीशु मसीह के आने से पूरी होनी थी जो सदा तक राज करेगा।

4. *इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा।* पुराने नियम की मुख्य वाचा वही है जो परमेश्वर ने 400 वर्ष की मिसर की दासता से छुड़ाने के बाद इस्राएलियों के साथ सीनै पर्वत पर बांधी थी (निर्गमन 20)। इस वाचा में परमेश्वर के इस्राएल का परमेश्वर होने और उन्हें अपने लोग बनाने की प्रतिज्ञा और उनके उस व्यवस्था को मानने की वचनबद्धता है, जिसे वह मूसा के द्वारा देने वाला था। इस वाचा में, विशेषकर व्यवस्था के दिए जाने के सम्बन्ध में मूसा की भूमिका प्रमुख है, इस कारण आमतौर पर इसे ''मूसा की वाचा'' के रूप में ही जाना जाता है। बेशक हमें यह याद रखना आवश्यक है कि वाचा अपने आप में केवल परमेश्वर और मूसा के बीच नहीं, बल्कि परमेश्वर और पूरी इस्राएल जाति के बीच थी।

पुराना नियम एक पांचवीं वाचा की बात भी करता है जो भविष्य में आने वाली थी, पर जो पुराने नियम के लेखों के लिखे जाने के समय नहीं आई। इस ''नई वाचा'' की भविष्यवाणी

यिर्मयाह 31:31-34 में की गई: ''फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूंगा ...।''

यिर्मयाह की पुस्तक ने पहले उन्नतालीस अध्याय मुख्यतया परमेश्वर के आने वाले न्याय की बात विद्रोही लोगों को बताने के यिर्मयाह के काम की कहानी बताते हैं। इस समय तक उत्तरी राज्य (इस्राएल) अश्शूरियों द्वारा बन्दी बनाया जा चुका था और अब दक्षिणी राज्य (यहूदा) पर बाबुल के लोगों द्वारा वैसे ही विनाश का सामना होने वाला था। इन सभी में दासता के बाद आने वाले अच्छे दिनों की आशा दी गई है। विनाश सुनिश्चित था, परन्तु परमेश्वर ने इस्राएल के साथ अभी सम्बन्ध नहीं तोड़ा था; उसने उन्हें एक बार और मौका देना था।

यिर्मयाह अन्य विशेषताओं की तरह इस बात में अन्य भविष्यवक्ताओं जैसा था कि उसके संदेश में विनाश और आशा दोनों के तत्व थे। विनाश की उसकी भविष्यवाणियां 1 से 29 अध्यायों में, और आशा का उसका संदेश अध्याय 30 से आरम्भ होता है।

> ''इस्राएल का परमेश्वर यहोवा तुझ से यों कहता है, जो वचन मैं ने तुझ से कहे हैं उन सभों को पुस्तक में लिख ले। क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आते हैं कि मैं अपनी इस्राएली और यहूदी प्रजा को बंधुआई से लौटा लाऊंगा; और जो देश मैं ने उनके पितरों को दिया था उस में उन्हें फेर ले आऊंगा, और वे फिर उसके अधिकारी होंगे, यहोवा का यही वचन है'' (आयतें 2, 3)।

विनाश के बाद बहाली की ऐसी प्रतिज्ञाएं पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की पहचान हैं, यिर्मयाह ने बहाली की इस आशा में विशेष योगदान दिया। परमेश्वर और उसके लोगों के बीच एक नई वाचा की भविष्यवाणी केवल यिर्मयाह 31:31-34 में है। यिर्मयाह के अनुसार, परमेश्वर इस्राएल के साथ सम्बन्ध बनाने का एक नया ढंग बनाएगा जिसमें पिछली वाचा से भी अधिक आशिषें होंगी:

> फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूंगा। वह उस वाचा के समान न होगी जो मैं ने उनके पुरखाओं से उस समय बान्धी थी जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, क्योंकि यद्यपि मैं उनका पति था, तौभी उन्हों ने मेरी वह वाचा तोड़ डाली। परन्तु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बान्धूंगा, वह यह हैं मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है। और तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है कि छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा।

नई वाचा के बारे में यिर्मयाह की भविष्यवाणी

यिर्मयाह 31 वाली वाचा में ''नया'' और अलग क्या होना था जिसने इसे पिछली वाचा

से अलग करना था? यिर्मयाह की भविष्यवाणी में नई वाचा की कई महत्वपूर्ण विशेषताओं की रूपदेखा दी गई है:

1. *यह भविष्य में होनी थी।* यिर्मयाह को समय का पक्का पता नहीं था; उसने केवल इतना कहा, "सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं" (31:31)। पुराने नियम के नबियों की इस प्रकार से अनिश्चित ढंग से भविष्य की बात करना विशेषता थी। "उन दिनों के बाद," "अन्तिम दिनों में," या "तब" जैसी अभिव्यक्तियां परमेश्वर के लोगों को आश्वासन देने के लिए देना आम बात था। यिर्मयाह के इस विषय में वाचा के स्थापित होने का समय तो नहीं है पर स्वाभाविक रूप में मसीहा के आने वाले युग के साथ लोगों के दिमाग में जुड़ गई। परमेश्वर के अभिषिक्त के आने पर, उसने नई वाचा का युग आरम्भ करना था।

2. *इसने इस्राएल और यहूदा के गोत्रों को फिर से मिला देना था।* यिर्मयाह ने स्पष्ट किया कि "इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूंगा" (आयत 31)। यह प्रतिज्ञा दो कारणों से महत्वपूर्ण थी। पहला यह कि यह जाति सुलैमान के समय के थोड़ा बाद तीन सौ से भी अधिक वर्षों से भी बंटी हुई थी। दूसरा, यह अब दस अर्थात उत्तरी राज्य जो इस्राएल कहलाता था की राजनैतिक पहचान नहीं रही। इन गोत्रों को अश्शूरियों ने पराजित करके राज किया। बहाली केवल पुराने नियम और राजनैतिक क्रम तक सीमित नहीं होनी थी। यिर्मयाह ने पहले भी सुझाव दिया था कि बहाल हुए इस्राएल में "सब जाति" में शामिल होते हैं। (देखें 3:16-18; यिर्मयाह 31 में इस प्रतिज्ञा का विश्वव्यापी पहलू नहीं दिया।)

3. *यह लोगों के मनों में रहनी थी।* पुरानी वाचा उन नियमों पर आधारित थी, जिसमें परमेश्वर के प्रति इस्राएलियों की जिम्मेदारियां ठहराई गईं थीं। इन नियमों को पूरा करने से उन्होंने वह पवित्र लोग बनना था, जो परमेश्वर की इच्छा थी। यिर्मयाह ने कहा कि नई वाचा ठहराते हुए परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की, "मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा ..." (आयत 33)। अन्य शब्दों में नई वाचा परमेश्वर के लोगों का भाग बननी थी ताकि वे अन्दर से परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के इच्छुक हों। परन्तु "दिल का धर्म" की यह अवधारणा पुराने नियम में बिल्कुल नईं नहीं है। व्यवस्थाविवरण 30:6 मूसा ने कहा, "... तेरा परमेश्वर तेरे और तेरे वंश के मन का खतना करेगा, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम करे, जिस से तू जीवित रहे।" परमेश्वर के लोगों ने पुरानी वाचा को अपने मनों में परमेश्वर की इच्छा के अनुसार नहीं माना था, परन्तु यिर्मयाह ने कहा कि नई वाचा के आने से ऐसा होगा।

4. *सिखाए जाने के बजाय, इस का सब को पता होना था।* "तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है कि छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे" (आयत 34)। पुरानी वाचा अब्राहम की शारीरिक सन्तान अर्थात इस्राएल लोग एक जाति के रूप में परमेश्वर की वाचा को; परन्तु इस्राएलियों की आने वाली हर पीढ़ी में हर एक को उसे जानने के लिए यहोवा के मार्ग बताना और सिखाना आवश्यक था। परन्तु नई वाचा में इसमें शामिल हर व्यक्ति के लिए वाचा के लोगों में होने की शर्त के रूप में "यहोवा को जानना" शामिल होना था।

5. *इसे तोड़ा नहीं जाना था।* आयत 32 में यिर्मयाह ने कहा, "वह उस वाचा के समान न

होगी जो मैं ने उनके पुरखाओं से उस समय बान्धी थी ... उन्हों ने मेरी वह वाचा तोड़ डाली।'' पुरानी वाचा का सबसे स्मरणीय तथ्य यह है कि इस्राएली लोग बार-बार इसकी शर्तों को तोड़ते थे। परमेश्वर ने तो समझौते का अपना भाग पूरा किया पर लोग आम तौर पर अपने भाग के प्रति बेईमान होते हैं। निर्गमन 32 के अनुसार, सोने के बछड़े की पूजा करने की घटना के साथ, उस वाचा के बांधे जाने के तुरन्त बाद भयंकर आज्ञा को तोड़ना था पूरे इतिहास में बार-बार उसका तोड़ा जाना होता रहा। यह तोड़ा जाना इतना अधिक होता रहा कि यहोवा के साथ इस्राएल की वाचा के अनुसार न चल पाने के इतिहास का सर्वेक्षण करते हुए प्रेरितों 7 में स्तिफनुस ने चौंकाने वाला भाषण देते हुए उन पर दोष लगाते हुए समाप्त किया था:

> जैसा तुम्हारे बाप-दादे करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो। भविष्यवक्ताओं में से किस को तुम्हारे बापदादों ने नहीं सताया, और उन्होंने उस धर्मी के आगमन का पूर्वकाल से सन्देश देने वालों को मार डाला, और अब तुम भी उसके पकड़वाने वाले और मार डालने वाले हुए। तुम ने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था तो पाई, परन्तु उसका पालन नहीं किया (प्रेरितों 7:51-53)।

परमेश्वर यिर्मयाह के द्वारा यह प्रतिज्ञा कर रहा था कि नई वाचा इस बात से अलग होगी कि यह कभी तोड़ी नहीं जाएगी।

6. *यह कभी खत्म नहीं होगी।* नई वाचा के आने की घोषणा के बाद यिर्मयाह ने यह प्रतिज्ञा बताई: ''यदि ये नियम [अपने प्राकृतिक नियमों के साथ, भौतिक संसार; आयत 35] मेरे सामने से टल जाएं तब ही यह हो सकेगा कि इस्राएल का वंश मेरी दृष्टि में सदा के लिये एक जाति ठहरने की अपेक्षा मिट सकेगा'' (आयत 36)। नई वाचा के स्थायीपन की पुरानी वाचा से कोई मेल नहीं था। इस वाचा के बन जाने के बाद किसी और वाचा की आवश्यकता कभी नहीं हुई।

7. *इससे पूर्ण क्षमा मिलनी थी।* नई वाचा की सबसे बड़ी प्रतिज्ञा शायद आयत 34 के अन्तिम भाग में मिलती है: ''क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा।'' क्षमा की प्रतिज्ञा सचमुच में उस सब को ध्यान में रखते हुए जो उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने के लिए ज़बर्दस्त की।

परमेश्वर की नई वाचा बांधी गई

अभी भी हमारे पास यह तथ्य है कि यिर्मयाह इस नई वाचा के समय के बारे में स्पष्ट नहीं था। नये नियम के लेखकों ने स्पष्ट किया क्योंकि उन्होंने एक सुर में इस बात का दावा किया कि नई वाचा क्रूस पर यीशु की मृत्यु के साथ बांधी गई थी। अपने चेलों के साथ अन्तिम भोज में खाते और अगले चेलों के लिए प्रभु भोज की स्थापना करते हुए यीशु ने उस नई वाचा की स्पष्ट बात जिसके बारे में यिर्मयाह द्वारा कहा गया था कि वह उसकी मृत्यु पर बांधी जाएगी: ''इसी रीति से उस ने भोजन के बाद कटोरा भी यह कहते हुए लिया, यह लोहू में जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है नई वाचा है'' (लूका 22:20)।

नये नियम के कई हवाले इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि यीशु के आगमन और मृत्यु से अब नई वाचा बन चुकी है। यिर्मयाह द्वारा बताई गई सभी प्रतिज्ञाएं अब (पूरी हो चुकी) हैं या

होने की प्रक्रिया में हैं।

1. *नई वाचा भविष्यवाणी को पूरा करते हुए आई।* यीशु यिर्मयाह के समय के लगभग छह सौ साल बाद आया और उसने यह जानते हुए अपने आपको नई वाचा में लाए जाने के रूप में देखा (देखें लूका 22:20)। लूका 4:18, 19 उसके यशायाह 61:1, 2 में मसीहा से सम्बन्धित भविष्यवाणी को पढ़ने और नासरत में आराधनालय में इकट्ठा हुए लोगों से यह कहकर बढ़ते हुए लिखता है, "तब वह उन से कहने लगा, कि आज यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ है" (लूका 4:21)। पौलुस ने यह लिखकर यीशु की भविष्यवाणी के पूरा होने की पुष्टि की।

> परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले (गलातियों 4:4, 5)।

स्पष्टतया नये नियम के कारण ही मसीही लोग आज और यीशु की मृत्यु के समय से नई वाचा के युग में रहते हैं। यिर्मयाह 31 वाली प्रतिज्ञाएं यीशु के कारण हमारे लिए वास्तविकता बन चुकी थी।

2. *नई वाचा से बहाल हो चुके लोग लाए गए।* यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की कि बहाल हुए "इस्राएल" में "सब जातियों" को परमेश्वर के पास इकट्ठा किया जाएगा (3:16-18)। नया नियम इस बात की घोषणा करता है कि यहूदी और अन्य जाति दोनों यीशु में "नया इस्राएल" अर्थात परमेश्वर की नई वाचा के लोग बनते हैं। पौलुस ने व्याख्या करते हुए कहा, "क्योंकि न खतना, और न खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि। और जितने इस नियम पर चलेंगे, उन पर, और परमेश्वर के इस्राएल पर, शान्ति और दया होती रहे" (गलातियों 6:15, 16; RSV)। रोमियों 1:16 इस बात की ओर संकेत देता है कि सुसमाचार (खुशखबरी) "हर एक विश्वास करने वाले के लिए, पहले तो यहूदी और फिर यूनानी के लिए उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है।" इफिसियों के नाम पौलुस का पत्र घोषणा करता है कि मसीह के क्रूस में परमेश्वर ने अन्यजातियों के बीच "अलग करने वाली दीवार को ढाह दिया" और "दोनों को एक कर लिया" (इफिसियों 2:14)। अन्य शब्दों में "नया इस्राएल यहूदी और अन्यजाति दोनों को मिलाकर बनता है।" परमेश्वर ने यहूदा और इस्राएल को राजनैतिक क्षेत्रों के रूप में नहीं बल्कि परमेश्वर के आत्मिक घराने के भाग को आबाद किया है जिसमें मसीह में विश्वास करने वाले भी आते हैं।

3. *नई वाचा लोगों के दिलों पर लिखी गई थी।* मसीह के सुसमाचार में, हमारे लिए भला करने की प्रेरणा नियमों के संग्रह की शर्तों में नहीं बल्कि एक प्रेमी उद्धारकर्त्ता के ज्ञान में जो हमारे बलिदान हमें सही ढंग से करने की पुकार करता है (बेशक, जीने का वह ढंग पवित्र शास्त्र के लेखों में ठहराया गया, सो आज भी हमारे पास है "नियम" हैं)। परमेश्वर ने हमें केवल "नई व्यवस्था" (नई आज्ञाएं) ही नहीं बल्कि उसने हमें एक नई प्रेरणा मसीह का क्रूस और नई सामर्थ (पवित्र आत्मा) दिया है जिसके द्वारा हमें जीवित रहना है। (देखें प्रेरितों 2:38; 5:32; रोमियों 8:6-14; इफिसियों 1:11-14.)

4. *नई वाचा के परमेश्वर का उन सब को पता है जो उसका भाग हैं।* पुरानी वाचा अब्राहम

की शारीरिक सन्तान के सब लोग हैं। जन्म लेने पर किसी इस्राएली के अपने आप परमेश्वर के आज्ञाकार होगा। यह लोगों के लिए एक विशेष समूह के साथ एक राष्ट्रीय वाचा थी। उसके विपरीत राष्ट्रीय न होकर आत्मिक नई वाचा का भाग भी बनता वह परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु में और मसीह में विश्वास करके अपने स्वैच्छिक कार्य के द्वारा लोग वाचा में शामिल थे (देखें प्रेरितों 2:37, 38; गलातियों 3:26, 27; रोमियों 6:3-5)। वाचा के लोगों के साथ भागी बनने के लिए विश्वास का होना आवश्यक था। वाचा के भीतर किसी को भी यह सिखाने की आवश्यकता नहीं है कि "यहोवा को जानो।" (यह वाचा के *बाहर* के लोगों को सिखाने की आवश्यकता को खत्म नहीं कर देगा; देखें मत्ती 28:18-20.)

5. *नई वाचा कभी खत्म नहीं होगी।* हम चकित हो सकते हैं कि यह कैसे हुआ कि मसीह की नई वाचा इस प्रतिज्ञा को पूरा कर सकती है कि यह कभी टूटेगी नहीं। बेशक परमेश्वर वाचा के अपने भाग को पूरा करेगा। उसने पहली वाचा के अपने भाग को पूरा किया था पर उसमें इससे भी बढ़कर बात थी, क्या हम दावा कर सकते हैं कि कलीसिया द्वारा नई वाचा को पूर्णतया पूरा किया जा रहा है ? नहीं। लोग व्यक्ति रूप में विश्वासी यदि नई वाचा को त्यागना चुनते हैं तो वे इसका भाग नहीं रहेंगे (गलातियों 5:2-4; इब्रानियों 6), पर वाचा बरकरार रहती है कलीसिया मसीह के साथ अपनी वाचा के प्रति विश्वासयोग्य है, नहीं तो यह कलीसिया नहीं होगी।

6. *नई वाचा कभी खत्म नहीं होगी।* इब्रानियों की पुस्तक (नये नियम का लेख जिसमें नई वाचा के बारे में अधिकतर बातें) इन शब्दों के साथ आरम्भ होती हैं:

> पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें कर। इन दिनों के अन्त में हमसे पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है (इब्रानियों 1:1, 2)।

मसीह के आगमन से, हम "अन्तिम दिनों" अर्थात वाचा के सम्बन्ध के अन्तिम काल में जो परमेश्वर बनाएगा, प्रवेश कर चुके हैं। यीशु परमेश्वर का "अन्तिम वचन" है और जिस भी किसी को उद्धार मिलता है वह उसके द्वारा ही होता है। इस वाचा की जगह कोई और वाचा नहीं ले सकती। इब्रानियों 8:8-12 अर्थात नये नियम की एक मात्र जगह जहां यिर्मयाह 31:31-34 को पूर्ण रूप में दिया गया है, यिर्मयाह की भविष्यवाणी यह दिखाने के लिए बताता है कि पुरानी वाचा खत्म होने के लिए दी गई है: "नई वाचा की स्थापना से उस ने प्रथम वाचा को पुरानी ठहराई, और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है" (इब्रानियों 8:13)। इसके विपरीत नई वाचा सदा तक रहेगी।

7. *नई वाचा पूर्ण क्षमा लेकर आती है।* पुरानी वाचा में बताए गए बलिदान (विस्तृत नियमों के लिए देखें लैव्यव्यवस्था की पुस्तक) चाहे इस्राएली लोगों को अपने परमेश्वर के साथ सहभागिता बनाए रखने के योग्य बनाते हैं, पर फिर भी उनमें कुछ कमी थी। उनमें एक ही बार सब के लिए पाप मिटाने की सामर्थ नहीं थी। जिस कारण उन्हें बार-बार दोहराना आवश्यक था। किसी के पापों को "याद न किए" जाने के योग्य, जैसा कि यिर्मयाह ने प्रतिज्ञा की कि नई वाचा में होगा, वे बलिदान उनके पापों को स्मरण कराते रहते थे। इब्रानियों की पुस्तक बताती है कि

क्रूस पर यीशु के मरने से सब कुछ बदल गया। उसने एक ऐसा बलिदान दिया जो वह काम कर सकता था जो पहले किए जाने वाले बदिलान कभी नहीं कर पाए:

> परन्तु जब मसीह आने वाली अच्छी-अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया, तो उसने और भी बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर जो हाथ का बनाया हुआ नहीं, अर्थात इस सृष्टि का नहीं। और बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया। ...
>
> और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उस मृत्यु के द्वारा जो पहिली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें (इब्रानियों 9:11-15)

> क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में जो सच्चे पवित्र स्थान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया, पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिए अब परमेश्वर के साम्हने दिखाई दे। यह नहीं कि यह अपने आपको बार-बार चढ़ाए, जैसा कि महायाजक प्रति वर्ष दूसरे का लोहू लिए पवित्र स्थान में प्रवेश किया करता है। नहीं तो जगत की उत्पत्ति से लेकर उसको बार-बार दुख उठाना पड़ता; पर अब युग के अन्त में वह एक बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे। और जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है। वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिए एक बार बलिदान हुआ और जो लोग उस की बाट जोहते हैं, उनके उद्धार के लिए दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा (इब्रानियों 9:24-28)।

नई वाचा के परिणाम

यिर्मयाह ने चाहे नई वाचा के तात्पर्य नहीं बताए जिसके आने की उसने घोषणा की, पर नया नियम बताता है, विशेष कर के इब्रानियों की पत्री। आज बाइबल की व्याख्या करने में आम तौर पर वाचाओं में परिवर्तन को नज़रअन्दाज़ कर दिया जाता है; और ऐसा करने पर बहुत सी गलतफ़हमी पैदा हो सकती है। नई वाचा के कुछ तात्पर्य जो इब्रानियों 8-10 में स्पष्ट दिए गए हैं इस प्रकार हैं:

1. *यीशु के कारण, पुरानी वाचा की याजकाई खत्म हो गई* (देखें 7:1-8:13)। यीशु अब हमारा महायाजक है, और हमें किसी दूसरे की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में नया नियम सिखाता है कि अब केवल मान्य याजकाई स्वयं मसीह की याजकाई है। मसीही लोगों के रूप में हमें भी "राजपदधारी, याजकों का समाज" कहा गया है (1 पतरस 2:9, 10) और कई बार "सब विश्वासियों की याजकाई" कहा जाता है। मसीह की विनती के कारण अब हमें मानवीय विनती करने वालों की सेवाओं की आवश्यकता नहीं है, जैसा कि 1 तीमुथियुस 2:5 में पौलुस ने भी कहा: "क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है।"

2. *यीशु के कारण, आराधना का पुरानी वाचा का स्थान बदल गया है* (देखें 9:1-11)। मसीह के द्वारा की जाने वाली आराधना में किसी विशेष स्थान का कोई महत्व नहीं है। इस्राएली

बलिदान के प्रबन्ध में तम्बू (जंगल में इस्राएली लोग वहनीय वेदी) और यरूशलेम में मन्दिर केन्द्र बिन्दु थे, जबकि मसीही विश्वास किसी भौतिक स्थिति पर केन्द्रित नहीं था। इसके बजाय यह उन लोगों के दिलों में रहता है, जो भरोसा रखकर मसीह की आज्ञा मानते हैं (यूहन्ना 4:21-24)। मसीही लोग जब चाहे जहां चाहे आराधना कर सकते हैं।

3. *मसीह के कारण, पुरानी वाचा के बलिदान अब मान्य नहीं हैं* (देखें 9:12-10:18)। यीशु के लिए सदा के लिए एक ही सिद्ध बलिदान से अस्थाई बलिदानों की कमियां पूरी हो गईं। अब जबकि संसार के पापों के लिए ''परमेश्वर का मेमना'' बलिदान हो चुका है तो पुराने बलिदान कैसे मान्य हो सकते हैं?

4. *मसीह के कारण, नई वाचा के वचन को पुरानी वाचा के वचन पर प्राथमिकता मिलनी आवश्यक है।* इब्रानियों की पुस्तक में यह नियम चाहे स्पष्ट नहीं बताया गया पर निश्चित रूप में इसका तातर्प्य यही है। यह तथ्य भी कि नये नियम के लेखकों ने जो बात पुराने नियम में बताई थी उसके वास्तविक अर्थ, महत्व और पूरा होने की बात बताई दिखाता है कि हमें उनकी बात को ध्यान से देखना चाहिए। परमेश्वर की प्रेरणा से दी गईं ये व्याख्याएं न केवल हमें नये नियम को समझने में सहायक हैं ''बल्कि विशेष रूप में वे पुराने नियम की सही ढंग से व्याख्या करती हैं।'' पुरानी वाचा को हम केवल नई वाचा की ऐनक लगाकर पढ़ने से ही समझ सकते हैं।

अपनी इच्छा का परमेश्वर का प्रकाशन राष्ट्रवादी यानी उसने अपनी सृष्टि के लिए अपनी योजनाओं और लक्ष्यों को धीरे-धीरे करके प्रगट किया है। किसी प्रकार बाइबल के भीतर पाया जाने वाला लिखित प्रकाशन प्रगतिशील है। इसका अर्थ यह है कि कुछ बातें जो पुराने नियम में बहुत महत्वपूर्ण हैं (जैसे याजकाई और बलिदान का प्रबन्ध) मसीह के आगमन के प्रकाश में पुनर्मूल्याकंन किया जाना आवश्यक है, और मसीही लोगों द्वारा उसे यूं ही मान लेना सही नहीं है। यह किसी भी प्रकार से यह सुझाव नहीं देता कि उनका महत्व नहीं है क्योंकि नया नियम हमें बताता है कि पुरातन समय में लिखी गई बातें ''हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गईं'' थीं (रोमियों 15:4; 1 कुरिन्थियों 10:6-11)। हम उनका अध्ययन करके वह सीख सकते हैं और वे आज भी हमारे लिए परमेश्वर का वचन हैं। उनकी व्याख्या परमेश्वर की मसीहा अर्थात यीशु के आने के प्रकाश में की जानी आवश्यक है, और नये नियम में हम यही चाहते हैं।

पुरानी वाचा अपने लोगों अर्थात इस्राएलियों को परमेश्वर का एक अद्‌भुत वरदान था। यह उन्हें उसके साथ वाचा के सम्बन्ध में बुलाने के लिए उसकी ओर से किया गया एक अनुग्रहकारी और करुणामय कार्य था। कितने दुख की बात है कि वे उस ऊंची बुलाहट के अनुसार जिसमें उन्हें बुलाया गया था चलने में नाकाम रहे! वह अनुग्रहकारी और करुणा से भरा होने के कारण परमेश्वर अपने लोगों को ही उस स्थिति में छोड़ने को तैयार नहीं था। उसने एक नई वाचा की प्रतिज्ञा की और अपने ही पुत्र के बलिदान के द्वारा उसे लेकर आया। मसीही लोगों को अब उस सुलह के द्वारा जो उसने हमें इतने अनुग्रहकारी ढंग से दी है अपने परमेश्वर के वफ़ादार होने का सौभाग्य और चुनौती दोनों मिले हैं।

पुराना और नया ''नियम''

हमारी बाइबलें पुराने नियम और नये नियम के दो प्रमुख भागों में बांटी गई हैं। यह विभाजन प्रत्यक्ष रूप में यिर्मयाह द्वारा बताई गई नई वाचा के बांधने और इब्रानियों की पुस्तक के रूप में

नये नियम के लेखों के द्वारा पुष्टि किए जाने से सम्बन्धित है (देखें 9:15)। पुराना नियम पुरानी वाचा के बांधे जाने और उस वाचा के द्वारा इस्राएल के साथ परमेश्वर के व्यवहार से सम्बन्धित है, जबकि नया नियम यीशु मसीह द्वारा लाई गई नई वाचा का वर्णन करता है।

सीधे कहें तो बाइबल के दोनों विभाजनों को ''पुरानी वाचा'' और ''नई वाचा'' नाम दिए गए हैं। बाइबल का अनुवाद लातीनी भाषा में होने पर, *testamentum* शब्द का प्रयोग किया गया। यूनानी शब्द (*diatheke,* ''नियम'') के लिए पुरानी भाषा के शब्द *δικτηεκε* ''वाचा'' का अनुवाद करने के लिए किया गया। इसका अंग्रेजी समानान्तर शब्द *testament* है। जिस कारण हम ''पुराना नियम'' और ''नया नियम'' कहने के समय पवित्रशास्त्र के दोनों व्याख्या और वर्णन के लिए करते हैं। अनुवाद की प्रक्रिया में हम परमेश्वर द्वारा बांधी गई दोनों वाचा को दिए जाने वाले लोगों में कुछ पर बाइबल के लेखक इस बात को स्पष्ट कर देते हैं यदि हम उन पर ध्यान दें।

क्या परमेश्वर को ''भूल'' सकता है?

पुरानी वाचा में परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की, ''मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा'' (यिर्मयाह 31:34)। हम भूल जाने, याद करने के दायित्व, कमज़ोरी, मानसिक योग्यता की कमी के रूप में सोचते हैं। तो फिर हमारा सिद्ध और सर्वशक्तिमान परमेश्वर पापों को कैसे ''भूल'' सकता है?

वास्तव में बाइबल यह नहीं बताती कि परमेश्वर पाप को वैसे भूलता है जैसे कुछ छूट जाने पर आप या मैं भूल सकते हैं। इसके विपरीत परमेश्वर के हमारे पापों का ''भूलना'' इस अर्थ में ''भूलना'' है कि वह हमारे पाप अब हमारे ऊपर नहीं रहने देता। जैसा कि पुराना और नया दोनों नियमों से पता चलता है, परमेश्वर को हमारी सब असफलताएं याद हैं। पर उस क्षमा के कारण जो मसीह के द्वारा दी जाती है, हमारा पाप उसके लिए ऐसा है जैसे कभी हुआ न हो।

हम आम तौर पर लोगों को यह कहते सुनते हैं कि परमेश्वर की तरह हमें ''क्षमा करके भूल'' जाना चाहिए। जिसका अर्थ यह होता है कि हम में अपने विरुद्ध दूसरों द्वारा की जाने वाली उसकी बुराइयों को याद न रखने की है। सच्चाई यह है कि वह हमें याद होती है, पर यदि हम ने सचमुच में क्षमा कर दिया है तो हम ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे वह हमें याद था और उन गलतियों के लिए दूसरों को जिम्मेदार बनाने से मना करते हैं। इस अर्थ में हम परमेश्वर की तरह ''क्षमा करके भूल रहे'' होते हैं, क्योंकि वह ऐसा ही करता है।

> क्योंकि व्यवस्था जिसमें आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिए उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आने वालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकतीं। नहीं तो उसका चढ़ाना बन्द क्यों न हो जाता? इसलिए कि जब सेवा करने वाले एक ही बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उनका विवेक उन्हें पापी न ठहराता। परन्तु उनके द्वारा प्रति वर्ष पापों का स्मरण हुआ करता है। क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे (इब्रानियों 10:1-4)।

यीशु के आने और क्रूस पर उसकी मृत्यु के, यिर्मयाह 31 की प्रतिज्ञा पूरी हो गई है। उनके जिन्होंने उसका वचन मान लिया और नई वाचा के अधीन आ गए हैं पाप से पूरी तरह से क्षमा किए गए हैं और अब उन्हें याद नहीं रखा जाता। कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यीशु की कहानी को ''खुशी की खबर'' कहा जाता है!